عُبَیدِ غوثؓ وخواجہ، رضاؔ وکُل اولیاء
مُحَمَّدْ جَمَالُ الدِّیْنْ خَانْ قَادِرِیْ رَضَوِیْ
ضِلَعْ بَہرائِچ شَرِیْف یُوْ. پِیْ. اَلْہِنْدْ
مُوْبَائِل نَمبَر : ← 7860520899

۴۰

चालिस दुरूद

तबर्रुकात की तसावीर के साथ



تبرکات

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलतें

- दुरूद व सलाम पढ़ने से गुनाह बख्शे जाते हैं (कन्ज़ुल अ़माल)
- दुरूद व सलाम पढ़ने से भूली हुई चीज़ याद आ जाती है (कन्ज़ुल अ़माल)
- दुरूद व सलाम पढ़ने वाले की मुहताजी दुर हो जाती है (सआदतुद़ दारैन)
- दुरूद व सलाम पढ़ने से बद बख़्ती दुर हो जाती है (सआदतुद़ दारैन)
- दुरूद व सलाम पढ़ने वाला नबीए करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लाम का महबूब हो जाता है
- दुरूद व सलाम पढ़ने से दिल ज़िन्दा हो जाता है और हिदायत का बाइस बन जाता है
- दुरूद व सलाम तंगदस्त के लिए सदक़े का क़ाएम मक़ाम हो जाता है (जावाहिरुल बहार)

सख़्त हराम

नामे अक़दस लिखे तो दुरुद जुरुर लिखे कि बाअ़ज़ ओलमा के नज्दीक दुरुद शरीफ लिखना वाजिब है (दुर्रे मुख़्तार,रुद्दुल मुहतार) अकसर लोग आज कल दुरुद शरीफ़ के बदले صلعم ؏ ص صہ लिखते है यह नाजाइज़ व सख़्त हराम है, यूँ ही रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्ह की जगह رض रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़न्ह की जगह رح लिखते हैं - यह भी न चाहिये, जिनके नाम - मुहम्मद, अहमद, अ़ली, हसन, हुसैन, वग़ैरह होते हैं इन नामों पर ص صہ बनाते हैं यह भी मना है कि इस जगह तो यह शख़्स मुराद है इस पर दुरुद का इशारा क्या माअ़ना (तहतावी वग़ैरह)

जिन औक़ात में दुरुदो सलाम पढ़ने की ताकीद या वज़ाहत है उन में से कुछ यह हैं

पाँचो वक्त नमाज़ों के बाद ❁ अज़ान के बाद ❁ एक़ामते नमाज़ के वक़्त मस्जिद में दाख़िल होने और बाहर आने के वक़्त ❁ जुम्आ की रात और दिन वुज़ू करने के वक़्त ❁ वुज़ू के बाद दुआ से पहले बीच में और अख़ीर में आसारे मुतबर्रकाते नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ियारत के वक़्त सुबह और शाम के वक़्त ❁ पीर की रात ❁ नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नामे मुबारक कहने और लिखने के वक़्त ❁ मुसीबत के वक़्त किसी चीज़ के भूल जाने के वक़्त ❁ घर में दाख़िल होते वक़्त

जिन औक़ात में दुरुदो सलाम न पढ़ा जाए वह यह हैं

फ़र्ज़ वाजिब और सुन्नते मुअक्किदा के क़अ्दए उला में अत्तहियात के बाद ❁ ज़ेबह के वक़्त ❁ छींक आते वक़्त ❁ ताजिर के सौदा बेचते वक़्त ❁ तअ़ज्जुब के वक़्त ❁ जिमाअ़ के वक़्त ❁ इन्सानी हाजत के वक़्त और नजिस मक़ाम पर

मग़्फ़िरत का ज़रिआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ وَّصَلَّى
اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ

अल्हम्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हालिवँ व सल्लल्लाहु अ़ला मुहम्मदिवँ व अ़ला अहलि बैतिही



जो शख़्स छींक आने पर यह दुरुद पढ़ेगा तो मिन जानिब अल्लाह एक परिन्दा पैदा होगा जो अ़र्श के नीचे पर फड़ फड़ाएगा और अल्लाह से अ़र्ज़ करेगा कि इस दुरुद शरीफ़ के पढ़ने वाले को बख़्श दे ।

चाँद से ज़्यादा चमकदार चेहरा होना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا
يَبْقٰى مِنْ صَلٰوتِكَ شَيْءٌ وَّبَارِكْ عَلَى
النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ بَرَكَاتِكَ
شَيْءٌ وَّارْحَمِ النَّبِيِّ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ
رَّحْمَتِكَ شَيْءٌ وَّسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ
حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ سَلَامِكَ شَيْءٌ

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़लन नबीय्यि मुहम्मदिन हत्ता ला यब्क़ा मिन स़लाति क शय उँव व बारिक अ़लन नबीय्यि मुहम्मदिन हत्ता ला यब्क़ा मिन ब र काति क शय उँव व अर हमिन नबीय्यि हत्ता ला यब्क़ा मिंर रह मति क शय उँव व सल्लिम अ़लन नबीय्यि मुहम्मदिन हत्ता ला यब्क़ा मिन सलामि क शय उन

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इर्शाद के मुताबिक़ इस दुरुद शरीफ़ के पढ़ने वाले का चेहरा पुल सिरात से गुज़रते वक़्त चाँद से ज़्यादा चमकदार होगा

मकतूबे रसूल

दुरूदे जमाली

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ
عَلٰى اٰلِهٖ بِقَدْرِ حُسْنِهٖ وَجَمَالِهٖ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अ़ला आलिहीं बि क़दरि हुस्निही व जमालिही

हज़रत इमाम हसन बिन अ़ली रदि़यल्लाहु अ़न्हुमा का इर्शाद है कि जो शख़्स किसी मुहिम या परिशानी या मुसीबत में हो तो इस दुरूद शरीफ़ को एक हज़ार १००० मर्तबा मुहब्बत और शौक़ से पढ़े और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करे तो अल्लाह तआ़ला उसकी मुसीबत टाल देगा और उस को उसकी मुराद में कामियाब कर देगा



मग़्फ़िरत का ज़रिआ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذّٰكِرُوْنَ
وَكُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ ۝

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन कुल्लमा ज़ क र हुज़ ज़ाकिरु न व कुल्लमा ग़ फ़ ल अ़न ज़िक रिहिल ग़ाफ़िलून

इमाम इस्माईल बिन इब्राहीम मुज़्नी ने हज़रते इमाम शाफ़ई को ख़्वाब में देखा और पूछा अल्लाह पाक ने आपके साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया? तो उन्होंने जवाब दिया इस दुरूद शरीफ़ की बरकत से अल्लाह पाक ने मुझे बख़्श दिया और इ़ज़्ज़त व एहतिराम से जन्नत में ले जाने का हुक्म दिया


कमीज़े मुबारक
इमामे हुसैन

औलाद को इज़्ज़त दिलाना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِ الْعَالَمِيْنَ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ
وَّاٰلِهٖ صَلٰوةً اَنْتَ لَهَا اَهْلٌ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ كَذٰلِكَ ط

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिल आ़ लमी न हबीबि क मुहम्मदिंवँ व आलिही सलातन अन त लहा अह्लुँ व बारिक व सल्लिम कज़ा लि क

जो शख़्स सुबह व शाम सात सात बार इस दुरुद शरीफ़ को पाबंदी से पढ़े तो इसकी बरकत से अल्लाह तआ़ला उस की औलाद को बा इज़्ज़त रखेगा



कामिल दुरूद

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا اَمَرْتَنَا اَنْ نُّصَلِّیَ
عَلَیْهِ وَصَلِّ عَلَیْهِ کَمَا یَنْبَغِیْ اَنْ یُّصَلّٰی عَلَیْهِ

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन कमा अ मर तना अन नुस़ल्लि य अ़लैहि व स़ल्लि अ़लैहि कमा यम्बग़ी अँय युं स़ल्ला अ़लैहि

हज़रत अनस रदियल्लाहु अ़न्ह ने प्यारे आक़ा स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से ऐसा दुरुद शरीफ़ पूछा जिसको कामिल दुरुद शरीफ़ कहा जा सके तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दुरुदे बाला तलक़ीन फ़रमायी

ईमान की हिफ़ाज़त

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिवँ व अ़ला आलि मुहम्मदिन सला तनं दा इ म तम बि दवा मिं क

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلٰوةً دَائِمَةً بِدَوَامِكَ

जो शख़्स पचास मर्तबा दिन में और पचास मर्तबा रात में इस दुरुद शरीफ़ को पढ़ेगा तो उसका ईमान जाने से महफ़ूज़ होगा



हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ए मुबारक की ज़ियारत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلَاةً تَكُوْنُ لَكَ رِضًا وَّلِحَقِّهٖ اَدَاءً ط

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन
सलातन तकू न ल क रिदवँ
व लि हक्किही अदा अन

जो शख़्स नमाज़े फ़ज्र के बाद और नमाज़े मग़रिब के बाद ३३-३३ बार यह दुरुद पढ़ेगा तो उस शख़्स की क़ब्र और रौज़ए अकदस के दर्मियान एक खिड़की खोल दी जाएगी और रौज़ए अक़दस की ज़ियारत उसको नसीब होगी



ताबईन का दुरूद शरीफ़

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिवँ व अ़ला अबीना इबराही म

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ ط

हज़रत सुफ़ियान बिन उ़येयना रहमतुल्लाहि अ़लैह ने फ़रमाया मैंने सत्तर साल से ज़्यादा हज़राते ताबईन रहमहमुल्लाह को दौराने तवाफ़ यह दुरुद शरीफ़ पढ़ते हुए सुना

मुकम्मल दुरूद शरीफ़

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुह़म्मदिवँ व अ़ला आलि मुह़म्मदिन

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ



हुजूरे नबीये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा से एक मर्तबा फ़रमाया तुम ना मुकम्मल दुरुद न पढ़ा करो। फिर सहाबाए किराम के पूछने पर आपने यह दुरुद शरीफ़ तअ्लीम फ़रमायी

छः लाख दुरूद शरीफ का सवाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ
مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلٰوةً دَائِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्म दिनं अ दं द मा फी इल्मिल्लाहि सलातन दा ओ म तम बि दवामि मुल्किल्लाह



शैखुद दलाइल ने हज़रत जलालुद्दीन सियूती से रिवायत की इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छः लाख़ दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब हासिल होता है

जन्नत में ठिकाना

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन नबीयियल उम्मीयियि अ़लैहिस सलाम

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ عَلَيْهِ السَّلَامُ

जुम्अ़े के दिन एक हज़ार मर्तबा यह दुरुद शरीफ़ पढ़ने वाले को मरने से पहले जन्नत में उसका ठिकाना दिखा दिया जाता है

जन्नत के फल

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन अ़ब्दि क व अ़ला आलि मुहम्मदिवँ व बारिक व सल्लिम

जो शख़्स इस दुरुद शरीफ़ को पाबंदी के साथ पढ़े वह जन्नत के ख़ास फल और मेवे खाएगा



तमाम औक़ात में दुरूद

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन फ़ी अव्वलि कलामिना
अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन फ़ी औ स ति कलामिना
अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन फ़ी आख़िरि कलामिना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِىْ اَوَّلِ كَلَامِنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ
فِىْ اَوْسَطِ كَلَامِنَا اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِىْ اٰخِرِ كَلَامِنَا

शैख़ुल इस्लाम अबू अ़ब्बास ने फ़रमाया जो शख़्स़ दिन रात में तीन तीन मर्तबा यह दुरुद शरीफ़ पढ़े वह गोया रात व दिन के तमाम औक़ात में दुरुद भेजता रहा

अस्सी साल की गुनाह से मआ़फि

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन अ़ब्दि क व रसूलि कन नबीयियल उम्मीयियि

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के इर्शाद के मुताबिक़ जो शख़्स़ ८० मर्तबा यह दुरुद पढ़े अल्लाह उसके अस्सी साल के गुनाह माफ़ फ़रमा देगा



क़र्ज़ की अदायगी

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ ط

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन

जुहर की नमाज़ के बाद यह दुरुद शरीफ़ सौ मर्तबा पढ़ने वाले को तीन बातें हासिल होंगी । ❶ कभी मक़रुज़ न होगा ।
❷ अगर क़र्ज होगा तो वह अदा हो जाएगा ख़्वाह ज़ितना भी क़र्ज हो ।
❸ क़ियामत के दिन उसका कोई ह़िसाब न होगा ।

दुअ़ा ए कुनूत के बाद दुरून्द शरीफ़

وَصَلَّی اللّٰہُ عَلَی النَّبِیِّ مُحَمَّدٍ وَّسَلَّمَ ط

व स़ल्लल्लाहु अ़लन नबीय्यि मुहम्मदिवँ व सल्लम

हज़रते हसन रदियल्लाहु अ़न्हु दुआ़ए कुनूत के बाद यह दुरुद शरीफ़ पढ़ा करते थे



रोज़ी में बरकत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन अ़ब्दि क व रसूलि क व स़ल्लि अ़लल मुअ्मिनी न व मुअ्मिना ति वल मुस्लिमी न वल मुस्लिमात

जिस शख़्स की यह ख़्वाहिश हो कि उसका माल बढ़ जाये वह इस दुरुद शरीफ़ को पढ़ा करे

दफ़अ़े निसयान का नुसख़ा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ كَمَا لَا نِهَايَةَ لِكَمَالِكَ وَعَدَدَ كَمَالِهٖ

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिवँ व आलिही कमा ला निहा य त लि कमालि क व अ़ द द कमालिही

दफ़अ़े निसयान के लिए यह दुरुद शरीफ़ मग़रिब और इशा के दरमियान जितना पढ़ सकें पढ़ें




الله
رسول
محمد
محمد صلى الله عليه وسلم
क़बरे रसूल
मकतुबे
रसूल

दुआ क़ुबूल होना

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَ الصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ
صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّارْضَ عَنْهُ رِضًى لَّا سَخَطَ بَعْدَهٗ ط

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद् दअ़् वतित
ताम मति वस्सला तिल क़ा इ मति
स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिवँ वर्दा अ़न्हु
रिद़लला स ख़ त बअ़् दहू

जो शख़्स़ अज़ान के वक़्त यह दुरुद
शरीफ़ पढ़ेगा अल्लाह उसकी
दुआ क़ुबूल फ़रमाएगा



दुरूद बराए मग़फ़िरत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
قَدْ ضَاقَتْ حِيْلَتِيْ اَدْرِكْنِيْ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम व बारिक अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन क़द् ज़ाक़त ही ल ती अदरिकनी या रसूलल्लाह

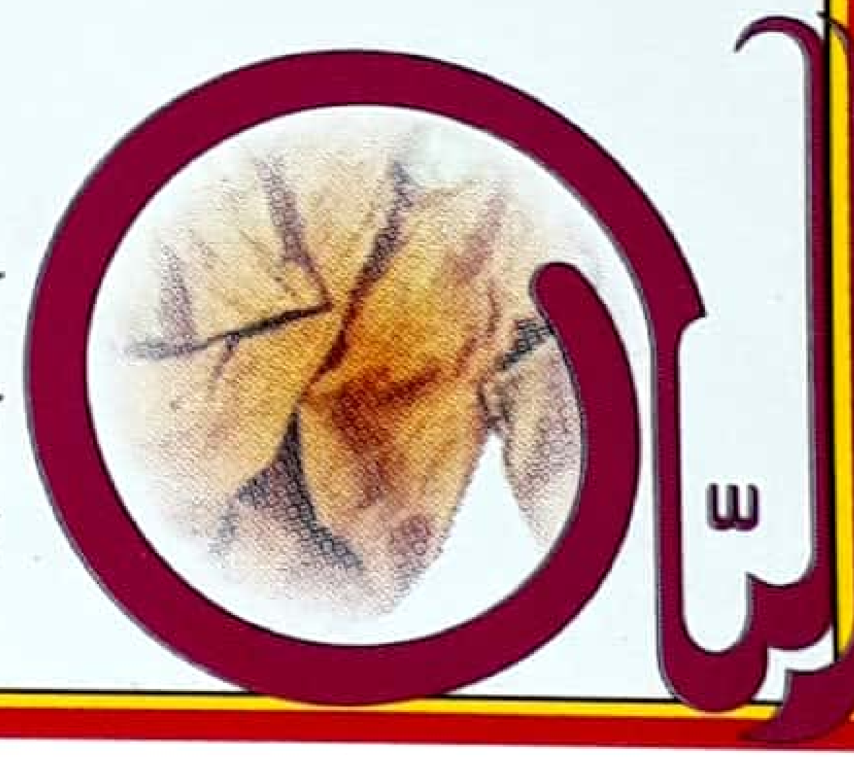
हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जो शख़्स मेरे नाम के साथ स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम लिखता है जब तक उस किताब में मेरा नाम रहेगा फ़रिश्ते उसके लिए मग़फ़िरत करते रहेंगे

हर दर्द की दवा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ دَاءٍ وَّ دَوَاءٍ وَّ بَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिम बि अ़ द दि कुल्लि दा इवँ व दवा इवँ व बारिक व सल्लिम

हर दर्द और बीमारी दूर होने के लिए अव्वल व आख़िर दुरुद शरीफ़ पढ़े और दर्मियान में बिस्मिल्लाह के साथ सूरए फ़ातिहा पढ़कर दम करें



परिशानियाँ दूर हों

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الطَّاهِرِ الزَّكِيِّ
صَلَاةً تُحَلُّ بِهِ الْعُقَدُ وَتُفَكُّ بِهَا الْكُرَبُ

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदि निन नबीय्यिल उम्मीय्यित त़ाहिरीज़
ज़कीय्यि स़लातन तु हिल्लु बिहिल अ़ो क़ दु व तु फ़क्कु बि हल कु र बु

यह दुरुद शरीफ़ बार बार पढ़ने से अल्लाह परिशानियों को दूर फ़रमा देता है

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शफाअ़त

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिवँ व अन ज़िल हुल
मक़ अ़ दल मु क़र्र ब अ़िन द क यौमल क़ियामति

जो शख़्स यह दुरुद पढ़ेगा उसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु
अ़लैहि वसल्लम की शफ़ाअ़त वाजिब होगी



रूहानी तरबीयत का मुजर्रब नुस्ख़ा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا
مُحَمَّدٍ فِىْ كُلِّ لَمْحَةٍ وَّنَفَسٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ ۝

अल्लाहुम्म स़ल्लि व सल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिवँ व अ़ला आलि सय्यिदिना मुहम्मदिन फी कुल्लि लम हतिवँ व नफ़सिम बि अ़ द दि कुल्लि मअ़्लू मिल ल क ●

दुआ़ में जब तक नबीए अकरम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर दुरूद न भेजेंगे तब तक दुआ़ ज़मीन व आसमान के दरमियान लटकी रहेगी

तमाम दुरूदों के बराबर

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ ذِكْرِهٖ اَلْفَ اَلْفِ مَرَّةٍ ط

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिम बि अ द दि कुल्लि ज़िक रिही अल फ़ अल्फ़ि मर रतिन

इस दुरुद शरीफ़ का पढ़ना हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम पर सारे दुरुद भेजने के बराबर है



दुरूदे नूर

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ نُوْرِ
الْاَنْوَارِ وَسِرِّ الْاَسْرَارِ وَسَیِّدِ الْاَبْرَارِ

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन नूरिल अनवारि व सिर्रिल असरारि व सय्यिदिल अबरारि

हज़रत अ़ली रद़ियल्लाहु अ़न्हु से हदीस शरीफ़ नक़ल है कि तुम्हारा मुझपर दुरुद पढ़ना तुम्हारी दुआ़ओं की हिफ़ाज़त करने वाला है और तुम्हारे रब की रज़ा का सबब है



ख़ज़ीनए फ़ज़ाइल व बरकात

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلٰوةً
وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

सल्लल्लाहु अलन नबीयियल उम्मीयियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सलातवँ व सलामन अलै क या रसूलल्लाह

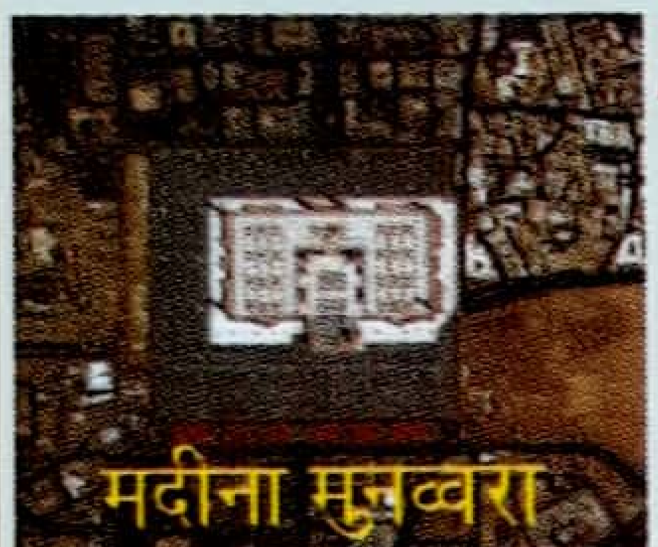
यह दुरुद शरीफ़ हर नमाज़ खुसूसन नमाज़े जुम्आ के बाद मदीना मुनव्वरा की तरफ़ मुह करके सौ मर्तबा पढ़ने से बेशुमार फ़ज़ाएल व बरकात हासिल होते हैं



अ़रशे अ़ज़ीम के बराबर सवाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مِلْاَ السَّمٰوٰتِ وَمِلْاَ الْاَرْضِ وَمِلْاَ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ط

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन मिल अस्समा वाति व मिल अल अरदि़ व मिल अल अ़र्शिल अ़जी़म



इस दुरुद शरीफ़ के पढ़ने वाले को आसमान व ज़मीन भर कर और अर्शे अ़ज़ीम के बराबर सवाब मिलता है



हज़ार दिन तक नेकियाँ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन कमा तुहिब्बु व तरदा लहु

एक रिवायत में है कि जो शख़्स यह दुरुद शरीफ़ एक मर्तबा पढ़ता है तो ७० फ़रिश्ते एक हज़ार दिन तक उसके नामए आमाल में नेकियाँ लिखते रहते हैं

दुरुद बाअ़िसे ज़ियारत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन नबीयियल उम्मीयि व अ़ला आलिही व सल्लिम

जो शख़्स जुम्अ़े के दिन एक हज़ार मर्तबा यह दुरुद शरीफ़ पढ़े उसको ख़्वाब में रिसालते म्आब सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ियारत होगी ५ या ७ जुम्अ़े तक पाबंदी से इसको पढ़ें

कटोरा



हज़रते इबराहीम अ़लैहिस सलाम

दुरूदे इब्राहीमी

हदीसे मुबारिका

जो मुझपर दुरुद पढ़ना भूल गया
वह जन्नत की राह भूल गया।

अल्ला हुम्म सल्लि अला सय्यि दिना मुहम्म दिवँ व अ़ला आलि
सय्यि दिना मुहम्म दिन कमा सल्लै त अ़ला सय्यि दिना इब्राही म
व अ़ला आलि सय्यि दिना इब्राही म इन्न क हमीदुम मजीद ❁
अल्लाहुम्म बारिक अ़ला सय्यि दिना मुहम्मदिवँ
व अ़ला आलि सय्यि दिना मुहम्म दिन कमा बारक त
अ़ला सय्यि दिना इब्राही म व अ़ ला आलि
इब्राही म इन्न क हमीदुम मजीद ❁



दस हज़ार दुरूद के बराबर

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिन अफ़ द़ला् स ल वातिं क

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اَفْضَلَ صَلَوَاتِكَ ط

इस दुरुद शरीफ़ के बारे में यह मन्कूल है कि यह दस हज़ार मर्तबा दुरुद शरीफ़ पढ़ने के बराबर है

हज़ार दिन तक सवाब मिलना

स़ल्लल्लाहु अ़ला मुहम्मदिवँ व जज़ाहु अ़न्ना मा हु व अह्लुहू

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ جَزَاهُ عَنَّا مَا هُوَ اَهْلُهٗ ط

जो शख़्स यह दुरुद पढ़े तो सवाब लिखने वाले सत्तर फ़रिश्ते एक हज़ार दिन तक इसका सवाब लिखेंगे



हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ियारत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ وَصَلِّ عَلٰى جَسَدِ
مُحَمَّدٍ فِى الْاَجْسَادِ وَصَلِّ عَلٰى قَبْرِ مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ ط

अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला रुहि मुहम्मदिन फ़िल अर्वाहि व सल्लि अ़ला ज स दि मुहम्मदिंन फ़िलं अज सादिं व स़ल्लि अ़ंला क़ब्रि मुहम्मदिन फ़िंल क़ुबूर

जो शख़्स़ यह दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा असको ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब होगी

मस्जिद में आने और जाने पर दुरूद

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ ط

हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मस्जिद में जाते या मस्जिद से निकलते तो यह दुरुद शरीफ़ पढ़ा करते थे



दुरूदे क़ुरआनी

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ بِعَدَدِ
مَا فِيْ جَمِيْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिवँ व आलिही व असहा बिही बि अ़ द दि मा फ़ी जमीअ़िल क़ुरआनि हरफ़न हरफ़वँ व बि अ़ द दि कुल्लि हरफ़िन अल्फ़न अल्फ़ा

तीन मर्तबा सुबह और शाम यह दुरुद शरीफ़ पढ़ने से ज़बरदस्त कामियाबी मिलती है

दुशवारी दूर हो

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदिन कमा हु व अह्द लुहू व मुस तहिक़ कुहू

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا هُوَ اَهْلُهٗ وَمُسْتَحِقُّهٗ

जिस शख़्स को काई दुशवारी पेश होतो वह तनहाई में बा वज़ू यह दुरुद १ मर्तबा पढ़े और १००० मर्तबा कलिमए तय्येबा पढ़कर दिल से दुआ़ करे इन्शा अल्लाह दुशवारी दूर होगी



अस्सी साल की इबादत का सवाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيْمًا ط

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन नबीयियिल उम्मीयियि व अ़ला आलिही व सल्लिम तस्लीमा़ं

जुम्अ़े के दिन जहाँ नमाज़ अ़स्र पढ़ी हो उसी जगह उठने से पहले अस्सी मर्तबा यह दुरुद शरीफ़ पढ़ने से अस्सी साल के गुनाह मुआ़फ़ होते हैं और अस्सी साल की इबादत का सवाब मिलता है



अफ़ज़ल दुरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدِ ﷺ الَّذِیْ مَلَاتَ قَلْبَهٗ مِنْ جَلَالِکَ
وَعَیْنَیْهِ مِنْ جَمَالِکَ فَاَصْبَحَ فَرِحًا مَّسْرُوْرًا مُّؤَیَّدًا مَّنْصُوْرًا

अल्लाहुम्म सल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदि निल लज़ी म ला त क़ल बंहू मिनं जलालि क व अ़य नयहि मिन जंमालि क फ अंस़ ब ह फ़ रि हम मसरुरमं मु अय्ये दम मनसूरा

शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह नोअ़मान रहमतुल्लाहि अ़लैहि को ख़्वाब में सौ मर्तबा रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ियारत हुई आख़िरी मर्तबा में उन्होंने हुज़ूर से अ़फ़ज़ल दुरुद शरीफ़ पूछा तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने यह दुरुद शरीफ़ तअ़लीम फ़रमायी


हज़रते अली के हाथ की लिखावट



عُبَیْدِ غَوْثْ وخَواجَہ، رَضَاؔ وَکُل اَوْلِیَآء
مُحَمَّدْ جَمَالُ الدِّیْنْ خَانْ قَادِرِیْ رَضَوِیْ
ضِلَعْ بَہرَائِچ شَرِیْف یُوْ. پِیْ. اَلْہِنْدْ
مُوْبَائِل نَمبَر : ← **7860520899**

उबैदे ग़ौसो ख़्वाजः रज़ा व कुल औलिया
मुहम्मद जमालुद्दीन ख़ान क़ादिरी रज़वी
ज़िलअ़ बहराइच शरीफ़ यूपी, अल-हिन्द
मोबाइल नम्बर **+917860520899**



40, DUROOD With [illegible] (Hindi) Published by: NOORI ACADEMY: 0091-9831705786

E mail:nooriacademy@rediffmail.com E mail:nooriacademy78692@gmail.com E mail:nooriacademy@hotmail.com Cell: +91 9163078692